फ़ैसला

मैत्रेयी पुष्पा

चित्राँकन
मोती कर्ण एवं सत्य नारायण लाल कर्ण





मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका होने के साथ, एक संवेदनशील कवियत्री भी हैं। इनका जन्म 1944 में उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के गाँव में हुआ था। इनकी रचनाओं में नारी ग्रामीण परिवेश की पृष्ठभूमि में रहकर भी, अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहती है।

इनके उपन्यासों में *स्मृतिदंश, बेतवा बहती रही, इदन्नमम्, झूला नट, चॉक, अलमा कबूतरी* तथा कहानी संग्रहों में *चिन्हार, ललमनियाँ* एवं कविता संग्रह *लकीरें*, चर्चित हैं। इनकी रचनाओं का, अंग्रेजी के अलावा तमिल, कन्नड़ तथा उर्दू में भी अनुवाद हुआ है। मैत्रेयी जी को हिन्दी अकादमी कृति सम्मान, प्रेमचन्द सम्मान, नंजना गुडू तिरुमालम्बा शश्वती पुरस्कार एवं कथा पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। इनकी लेखनी आज भी समाज के आडंबरों से जूझती, ग्रामीण नारी पात्रों का सृजन कर रही है।



KATHA

पहला संस्करण, 1996
द्वितीय संस्करण, 2004
कृति स्वामित्व © कथा, 1996
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
ब्रजबासी आर्ट प्रेस लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 81-85586-45-4

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।
ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग,
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 2652 4350, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः editors@katha.org
इंटरनेटः http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

फ़ैसला

लेखिका
मैत्रेयी पुष्पा

चित्राँकन
मोती कर्ण
एवं
सत्य नारायण लाल कर्ण

(मूल कहानी का रूपांतर)

क

कथा, नई दिल्ली



आदरणीय मास्साब,

सादर प्रणाम,

शायद आपने सुन लिया हो, आज चुनाव परिणाम घोषित हो गये हैं।

आज भी मैं चकित रह गई, जैसे अपनी जीत के दिन।

कभी सोचा न था कि प्रधान-पद के लिए चुनी जाऊँगी।

कैसे मिले इतने वोट?



बहनों को धन्यवाद देने मैं पथनवारे जा पहुँची। और कारण समझ आया, जब मैंने औरतों को प्रसन्न देखा। वैसे मेरा वहाँ जाना ठीक नहीं माना जाता था। रनवीर तो कह ही चुके थे कि तुम अब सिर पर तसला धरे नहीं सोहती। आख़िर प्रमुख की पत्नी हो।

जब मैं प्रधान बन गई, तो हर जगह उनका और हमारे गाँव का सम्मान बढ़ गया।

मैं गाँव की औरतों से दूरी बनाये रखने के आदेश तले दबने लगी। पर मैं उनके बीच पहुँच ही जाती।

इसुरिया के बारे में तो आपको मैंने बताया था।

हम दोनों गाँव में एक ही दिन ब्याहकर आए थे। शरमाना उसका स्वभाव नहीं।

एक दिन बकरियाँ हाँकते, वह पथनवारे में आ गई। "ओ बसुमतिया??... ? ओ पिरमुखनी?"

सारी औरतें हँस पड़ीं।



और वह झमककर बोली, "पिरधान हो गयीं, चलो सुख हो गया, ए? सब जनी सुनो। बरोबरी का जमाना है। अब मरद मारे, तो आ जाना बसुमती के ढिंग। करवा देना जेहल। ओ बसुमतिया? रनवीरा की तरह अन्याय तो न करेगी?

"मेरे मरद ने पीटा था तो रनवीर को कागद मैंने खुद पकड़ाया था। रन्ना ने कागद दाब लिया, मरद फिर चढ़ आया छाती पर।"

इसुरिया ने बाहें उघाड़ दीं। जगह-जगह खंरोचों के निशान थें। सबके मुँह मुरझा गये।

"सुन लो, रनवीर एक दिन चाखी पीसेगा और हमारी बसुमती राज करेगी ..." इसुरिया कहती चली गई।





सुबह सवेरे चूल्हा जलाकर, मैंने तवा रखा ही था कि आवाज़ आई।

"बसुमती, ओ बसुमतिया ..." इसुरिया थी।

"तेरी सौं बसुमती, पंच तेरी परतिच्छा में चौतरें पर बैठे हैं।" वह खुशी से खिल रही थी।

सभा में जाने लगी, तो औरतें घरों से झाँकने लगीं। यह देखने कि मैं घूँघट डाले हूँ या नहीं।



माथे तक साड़ी का किनारा। न घूँघट था न खुला।

चबूतरे के नज़दीक पहुँचते ही, रनवीर लपककर पहुँच गये। कठोर आवाज़ में बोले, "कहाँ?"

उत्तर इसुरिया ने दिया, "पिरमुख जी, हम पंचायत में जा रहे हैं। रास्ता दो।"

वे मुझसे बोले, "घर चलो तुम।"

इसुरिया मुँह बाए देखती रही।

मैं झुलस गई। सारी उमंग मर गई। विवश इसुरिया भी मेरे पीछे-पीछे लौट आई।

ज़रा सोचिये?

अगर आप प्रधान होतीं और आपके पति आपको पंचायत में न जाने देते, तो आप क्या करतीं?

इसुरिया बड़बड़ाती रही, "लो हद हो गई, बसुमतिया प्रधान और राज करे रनवीर। प्रधानी से इन्हें अब क्या, अपनी पिरमुखी संभालें।"

घुटन भर गई मेरे सीने में।

मास्साब, मेरी आत्मा में किर्चें चुभती रह गईं।



रनवीर ने लौटकर खूब समझाया।

"पंचायती चबूतरे पर बैठी तुम शोभा देतीं? लाज-लिहाज मत उतारो।"

उस दिन के बाद, पंचायती चबूतरे से बुलावे आते रहे। देहरी उलाँघते ही कोई बरजने लगता। पता नहीं मुझमें ही हिम्मत नहीं थी। उत्तर मन में उबलता। भड़ास होठों तक आती, फिर दूध के झाग-सा बैठ जाता विरोध।

ज़रा सोचिये?

बसुमती की तरह, अपने गाँव की पंचायत की प्रधान कोई भी महिला बन सकती है। क्या आप बनना चाहेंगी?

क्या आपके गाँव की महिलाएँ पंचायत की बैठक में भाग लेती हैं? आपके ग्राम पंचायत की कितनी सदस्य महिलाएँ हैं?





मास्साब, मैंने कई दिनों तक सोचा था, दस्तख़त नहीं करूँगी। करने दो मनमानी। रनवीर रजिस्टर लिए चारपाई पर बैठे थे। कई बार पुकार चुके थे। आखिर उनके झल्ला जाने पर, मैं उनके पास जा खड़ी हुई।

"रनवीर?"

वह मुँह खोले देखते रह गए।

"मजूर आए थे मेरे पास, उनकी गारा ... पत्थर, ढुलाई की मजूरी, अभी तक ....? गाँव की औरतें ताना देती हैं, कि भली हुई तुम प्रधान, अपने द्वार पर ही पक्का खरंजा करा लिया। अपनी गली ही पत्थरों से जड़ ली, हमसे क्या बैर था बहन, जो कीचड़ में ही छोड़ दिया?"

ज़रा सोचिये?

ग्राम के निवासी होने के नाते, आपको पंचायत के पंचों या प्रधान से ग्राम के विकास कार्यों पर ध्यान आकर्षित करने, और प्रगति के बारे में जानने का अधिकार है।

"कौन कहेगा कि यह पिरमुख का गाँव है? गड्ढों में पानी, मच्छर, कूड़ा-करकट, कुछ भी तो नहीं हुआ जवाहर रोज़गार योजना के पैसे से ..." मैं कहती चली गई।

"गाँव की औरतें कह रही थीं, या तुम? ये औरतें कब से बोलने लगी? हमसे तो कभी किसी ने कुछ नहीं पूछा और तुमसे इतने सवाल," रनवीर ने ताना देते हुए कहा।

काँपते हाथों से मैंने चुपचाप लिख दिया।

'बसुमती देवी'

दस्तख़त!

रोज़गार योजना के रुपये को जिस दिन लाई थी, उस दिन गाँव के लिये चमचमाते स्कूल, पक्की गलियाँ, रोज़गार और न जाने क्या-क्या सपने साधे थे।

मेरी ही छः अक्षर के दस्तख़त ने सपनों के घरोंदे को कण-कण आहत कर डाला।

ज़रा सोचिये?

अगर आप गाँव की प्रधान होतीं, तो क्या विकास के पैसे का दुरुपयोग होने देतीं? आप बसुमति की जगह होतीं तो क्या करतीं?



कुछ दिन बाद, एक वृद्धा ने किवाड़ खटखटाया,

"ओ बेटा?? बसुमती?"

मैं पौर में आ गई। बूढ़ी अम्मा पाँवों में गिर पड़ीं, "बेटी, लाचारी तो समझ हमारी। जमाई को छुट्टी नहीं मिलेगी। हमारी बेटी हरदेई का फैसला करवा, बहू।"

मैं खड़ी-खड़ी सुनती रही।

"बेटी, लड़की का दर्द नहीं देखा जाता। बाप तो राच्छत है, चैन से जीना नहीं बदा हमारे भाग में," कहते-कहते उसकी आँखों से आँसू की धार बह उठी।



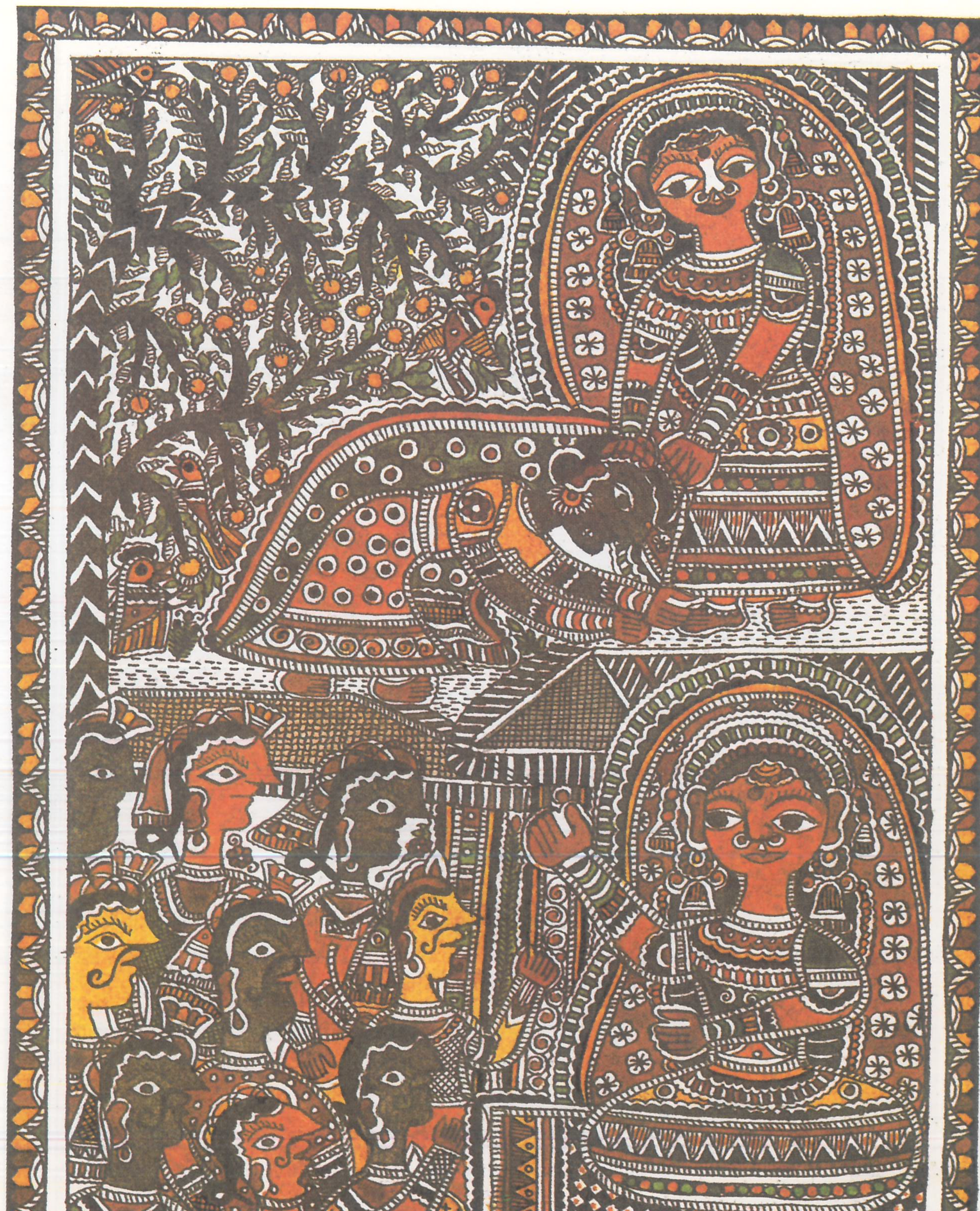
उस समय न जाने कैसे निर्णय ले डाला कि ठिठके कदम अम्मा के साथ चल पड़े। देवर देववीर रोकता ही रह गया।

फ़ैसला करवाकर आई, तो मन में अपार संतोष था। पंचायत का चबूतरा, मंदिर-सा लगा था।

उस रात, रनवीर की बातों का ज़हर मुझे सिर से पाँव तक नहला गया।

ज़रा सोचिये?

घर की पाबंदियों के बाद भी, अपना कर्त्तव्य निभाने का साहस क्या आप कर सकती हैं?



"कचहरी करने का शौक था, तो वकालत पढ़ ली होती। ये नौटंकी कब बंद करोगी, बताओ।"

डर से मेरी घिग्गी बँधने लगी। फिर भी न जाने कैसे, शब्द होठों से झड़ पड़े।

"हरदेई गिड़गिड़ा रही थी। काश! तुमने उसका फ़ैसला कर दिया होता। तुम तो सब जानते हो, क्यों नहीं छुड़ाते उसे बाप के चुंगल से?



रनवीर क्रोध से काँपने लगे।

"कैसा फ़ैसला? जैसा तुम करके आई हो?"

"सुन ले, मजबूरी में खड़ी करनी पड़ी तू। मैं दो-दो पदवी नहीं रख सकता था। सोचा था, पत्नी से भरोसेमंद कौन होगा।"

"भरोसेमंद" शब्द कहते हुए उनके चेहरे पर ज़हरीली हँसी उभर आई, जो मेरे कलेजे में धार बनकर उतर गई। लगा सब कुछ छोड़, कहीं चली जाऊँ।

काश, मैं इसुरिया होती। मान-मर्यादा की दीवारों से मुक्त। थोथी परंपराओं से परे।



सुबह उठी, तो करुण स्वर सुनकर घबरा उठी।

"ए बसुमतिया! विरथा है तेरी विद्या! ख़ाक है तेरी पढ़ाई!" छटपटाती इसुरिया की आवाज़ थी।

हरदेई ने कुएँ में कूदकर जान दे दी थी।

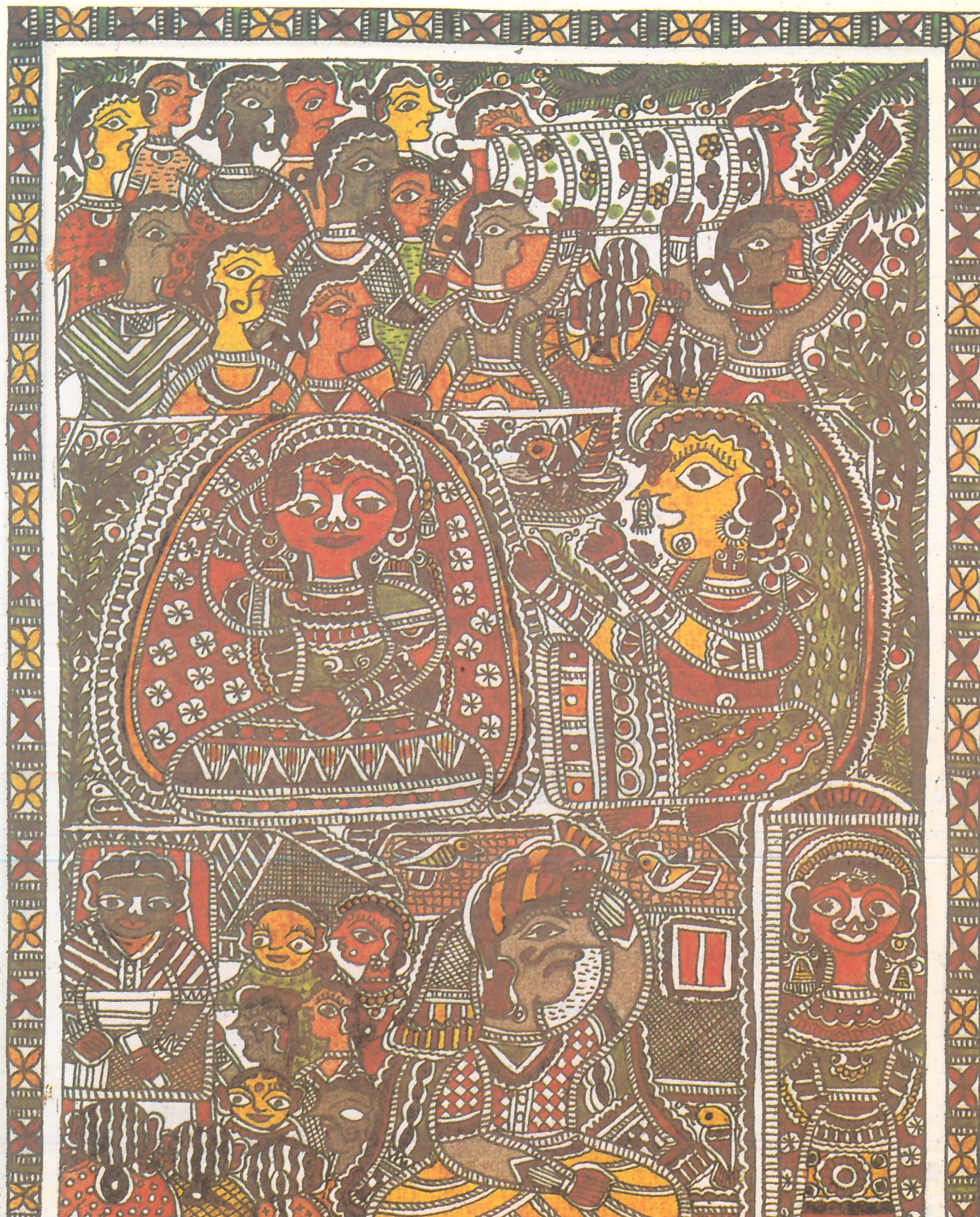
मैं निढ़ाल होकर आँगन में ही बैठ गई। रात ही रात, किसने पंचों का फ़ैसला बदल डाला? किसने रोका उसे अपने पति के संग जाने से?

इसुरिया मुझे झकझोर कर कहती रही, "अच्छा होता हम अपना वोट काठ की लठिया को दे आते। निर्जीव लकड़ी को। उठाए उठती, तो बैरी पर वार तो करती। पर रनवीर की दुल्हन, तुम तो बड़े घर की बहू ही रही। पिरमुख जी की पत्नी।"

लग रहा था जैसे हरदेई की अर्थी मेरे ही घर से उठी हो।

ज़रा सोचिये?

सदियों से पुरुष, नारी को लोक-लाज की दुहाई देकर दबाते रहे हैं। दुर्भाग्य है कि पुरुष की इस मानसिकता को बढ़ावा देने में, नारी की सहनशीलता ने भी योगदान दिया है।



समय बीत गया। प्रमुख का चुनाव फिर आ गया। रनवीर खड़े हुए। हवा कुछ ऐसी चली कि तीन उम्मीदवार चुनाव के पहले ही घुटने टेक गये। एक बचा, वह भी लुहार का लड़का। नादान था शायद।

चुनाव के दिन, रनवीर सुबह ही चले ग़ये। शाम को वोट डालकर मैं भी लौट आयी।



रनवीर रात को थके हुए लौटे।

समझने को कुछ शेष नहीं था। मैं पराजय पर उन्हें सांत्वना देने लगी। पति को दिलासा देने का हर संभव प्रयास किया मैंने। तन से, मन से।

तभी बाहर से देववीर का स्वर कानों में पड़ा। "अगर एक वोट और होता, तो भईया हारते नहीं।"

एक वोट।

विश्वास नहीं कर सकी मैं। मेरे भीतर सब कुछ डाँवाँडोल होने लगा। लेकिन, क्या करती?

उस दिन मैं अपने भीतर की इसुरिया को मार नहीं पाई।

क्षमा करना,

आपकी

बसुमती

कहानी के कठिन शब्दों के अर्थ

नीचे दिए गए शब्द इसी कहानी से लिए गए हैं। इन शब्दों के सरल अर्थ भी दिए गए हैं। इन्हें अपनी बोलचाल की भाषा में प्रयोग करने का प्रयास करें।

आदरणीय : सम्मान के योग्य
परिणाम : नतीजा, फल
घोषित : किसी बात की सूचना
वोट : मत
प्रसन्न : खुश, आनंद

विवश : मजबूर
झुलस : जल जाना
आहत : घायल, चोट खाया हुआ
विरोध : अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाना
भड़ास : मन में छिपा गुस्सा

सम्मान : आदर
प्रतीक्षा : इन्तज़ार, बाट जोहना
अन्याय : जुल्म, अनीति
आदेश : आज्ञा
उमंग : आनंद, मौज

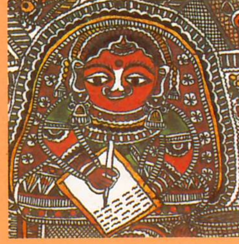
निर्णय : फैसला
परंपरा : रीति, बराबर चली आती हुई
निर्जीव : मृत, जिसमें जान न हो
मर्यादा : सीमा, हद
निढ़ाल : थककर
सांत्वना : ढाढ़स

शब्द अंताक्षरी खेलें

दो या अधिक के समूह में, यह खेल खेला जा सकता है।

- घेरा बना कर बैठ जाएं। सबसे छोटी उम्र का खिलाड़ी खेल शुरू करे।
- अपने नाम के अन्तिम अक्षर से वह कोई शब्द बोले।
- फिर दाईं ओर बैठा खिलाड़ी, उस शब्द के अन्तिम अक्षर से कोई शब्द बोले।
- फिर अगला खिलाड़ी ... इसी तरह खेल चलता रहे।
- अगर कोई खिलाड़ी शब्द न बोल पाए, तो उसके बाद वाला खिलाड़ी उसी अक्षर से शब्द बोले। उदाहरण: मान लें कि खेल शुरू करने वाले का नाम है – इसुरिया, तो वह नाम के अन्तिम अक्षर यानि 'य' से शब्द बोले, जैसे 'याद'। फिर अगला खिलाड़ी याद के अन्तिम अक्षर यानि 'द' से शब्द बोले, जैसे 'दरवाज़ा', इसी तरह खेल चलता रहे।

आप जब तक चाहें, यह अंताक्षरी खेल सकते हैं। इससे शब्दों का ज्ञान एवं शब्दावली बढ़ती है।



बसुमति गाँव की प्रधान है और वहाँ के प्रमुख की पत्नी। दाम्पत्य संबंधों की जटिलताओं से जूझती, पर अपने अधिकारों के प्रति सचेत। हमारे आज के राजनीतिक व सामाजिक सच्चाई का एक ज़बरदस्त चित्रण।

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइऐ अपने देश के साहित्य का ख़ज़ाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिये!

इस पुस्तक की कहानी हिन्दी भाषा की सुप्रसिद्ध लेखिका **मैत्रेयी पुष्पा** ने लिखी है।

क

सर्वश्रेष्ठ कथामाला

रु. 35

